Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जन्मकुण्डली में शिक्षाविद् एवं प्रोफेसर बनने के योग – एक अध्ययन

महामहोपाध्याय डॉ. गोविन्द गन्धे* डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव**

* शोध निर्देशक, कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन (म.प्र.) भारत
**सेवानिवृत्त वरिष्ठ चिकित्साधिकारी एवं ज्योतिषाचार्य, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ज्योतिष शास्त्र के मान्य सिद्धांतों द्वारा व्यवसाय चयन में सहायता प्राप्त होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य जन्मकुण्डली द्वारा व्यवसाय चयन के सिद्धांतों की व्यवहारिकता प्रमाणित करना है। इस अध्ययन में महाविद्यालय के प्राध्यापकों की कुण्डलियों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। इन कुण्डलियों के विश्लेषण से पाया गया है कि शिक्षा, ज्ञान के कारक ग्रहों एवं भावों का अत्यधिक प्रभाव इस व्यवसाय की सफलता में पड़ता है। शिक्षाविदों व प्राध्यापकों में गुरू ग्रह, शुक्र ग्रह तथा पंचमेश, नवमेश का बली होना आवश्यक होता है। इनका दशम् व्यवसाय भाव से भी सम्बन्ध होता है।

प्रस्तावना – ज्योतिर्विज्ञान प्राचीनकाल में एक स्थापित विद्या रही है तथा उसका उपयोग, खगोलीय घटनाओं को समझने तथा उनके प्रभाव से जनमानस को भविष्य की घटनाओं के शुभाशुभ बताने के लिये किया जाता था। वर्तमाान में इसके पुर्नस्थापन की आवश्यकता है ताकि भविष्य में पूर्वानुमान से, जनसाधारण भविष्य की योजनायें बना सकें।

वर्तमान में हर किसी को, अपने एवं परिवार के जीवनयापन हेतु कुछ न कुछ व्यवसाय करना होता है। विद्याध्ययन काल में ही यह मार्गदर्शन प्राप्त हो जाये कि किस व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी तो जीवन में सफलता की संभावना बढ़ जाती है।

ज्योतिषशास्त्र में, कारक भावों, कारक ग्रहों तथा विभिन्न ग्रहयोगों से व्यवसाय की प्रकृति का निर्धारण निर्देशित कियाहै। व्यवसाय किसप्रकार काहोगा, यह निर्णय व्यवसाय कारकग्रहों के स्वरूप, ग्रहबलआदि एवं व्यवसाय भाव के भावेशों पर निर्भर करता है, जो ग्रह बलवान होकर लग्न, लग्नेश एवं अन्य आजीविका के स्वरूप अथवा प्रकार को प्रदर्शित करने वाला होता है, उसी के अनुसार व्यवसाय निर्धारित होताहै।

बृहतपाराशरहोराशास्त्र में अथ वृत्ति निर्णयाध्याय में,

लग्नादिन्दोश्च दशमं प्रबलं वृत्तिदायकम्।
तदिशात् तत्रगात् खेटात्तदंशेशाच्च चिन्तयेत्।।
तद्दृष्टुश्च तद्राशे: स्वाभावोत्थं वदेत्पुमान्।
तेषां वृद्ध्या भवेद् वृद्धिरन्यथान्यत् फलं स्मृतम्।।[1]

उक्त उल्लेखित श्लोकों में बलवान लग्न या चन्द्रमा से दशम स्थान से मनुष्य की जीविका एवं व्यवसाय का विचार करने का लेख है।

इसी प्रकार विचारणीय दशम भाव में स्थित राशि, दशमेश, दशमगत्, नवांशेश ग्रह, दशमस्थ ग्रह इनमें से बलवान ग्रह या राशि के स्वभाव अनुसार व्यक्ति की वृत्ति कहें। यदि उक्त राशि या ग्रह बलवान हो तो उत्तम व्यवसाय फल तथा मध्यम बली हो तो मध्यम फल तथा साधारण या हीन बली हो तो क्रमश: साधारण या नाममात्र फल कहें।

इसी आशय का फलादेश श्रीकल्याण वर्मा विरचित सारावली के कर्मचिन्ताध्याय के निम्न श्लोकों में भी उल्लेखित है,

लग्नाद्दशमे राशौ कर्मफलं यत्प्रकीर्तितं मुनिभि:।
राशिग्रहणस्वभावैर्ग्रहदृष्ट्या तदहमपि वक्ष्ये।।
होरेन्द्वोर्बलयोगाद्यो दशमस्तत्भावजं कर्म।
तस्याधिपपरिवृद्ध्या वृद्धिर्ज्ञेयाऽन्यथा हानि:।।[2]

श्रीवैद्यनाथ विरचित जातक पारिजात के दशम भाव फल में निम्नलिखित श्लोक में,

आज्ञामानविभूषणानि वसनव्यापारनिद्राकृषि –
प्रव्रज्यागमकर्मजीवनयशोविज्ञानविद्या: क्रमात्।
कर्मस्वामिदिनेशबोधनगुरुच्छायासुतैश्चिन्तये –
दुक्तानि प्रविहाय पूर्वमशुभे मानी विमानो भवेत्।।[3]

उक्त श्लोक में दशमेश, सूर्य, बुध, गुरु और शनि से निम्नलिखित बातों का विचार करना चाहिये :–

आज्ञा, सम्मान, भूषण, वस्त्र, व्यापार, निद्रा, खेती–बाड़ी, प्रव्रज्या, आगम, कर्म या कार्य, जीवन निर्वाह, यश, विज्ञान, विद्या, इन सब का क्रम से विचार करें।

इसके अतिरिक्त शिक्षा विद् के लिए पंचमेश एवं नवमेश का दशमेश, धनेश व लाभेश से सम्बन्ध होना भी वांछनीय होता है।

उद्देश्य – ज्योतिषशास्त्र के अनेकानेक उपयोगों में से एक महत्वपूर्ण उपयोग व्यवसाय चयन में सहायता प्रदान करना भी है। वर्तमान में कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श का प्रचलन है। कैरियर मार्गदर्शन करते समय यदि फलित ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार व्यवसाय के विषय का चुनाव किया जाये तो व्यक्ति विशेष की सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र मेंज्योतिषशास्त्र की इस उपयोगिता को दृष्टिगत् कोरखतेहुए **'जातक की कुण्डली में शिक्षाविद् एवं प्रोफेसर बनने के योग का अध्ययन'** किया गयाहै।

प्रविधि– उक्त अध्ययन के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई :

1. सर्वप्रथम प्राध्यापकों एवं शिक्षाविदों की नौ कुण्डलियों का संग्रह किया गया।
2. प्रत्येक कुण्डली का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया –

ज्योतिषशास्त्र में शिक्षाविद् एवं प्रोफेसर के व्यवसाय चयन में सहायक विभिन्न ग्रह योगों का अध्ययन किया गया तथा उन ग्रह योगों के परिप्रेक्ष्य में समस्त कुण्डलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

3. प्रत्येक कुण्डली से प्राप्त निष्कर्ष एवं उनका विश्लेषण सामूहिक रूप से किया गया।
4. विश्लेषण करने के उपरांत निष्कर्षों का निर्धारण किया गया।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष–जातक की कुण्डली में शिक्षाविद् एवं प्रोफेसर बनने के योग के अध्ययन का निष्कर्ष– शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रकार के तकनीकी एवं गैर तकनीकी, मानविकी आदि विभिन्न विधाओं का विकास हो गया है जिसमें कई प्रकार की योग्यताओं वाले प्राध्यापक अथवा शिक्षकों की आवश्यकता होती है। उक्त अध्ययन में नौ प्राध्यापकों एवं शिक्षाविदों की कुण्डलियों का अध्ययन किया गया, जिसमें निम्नांकित प्रकार के ग्रह योगों एवं कारकों का पाया जाना सुनिश्चित हुआ:

1. अध्ययन के लिए चयनित कुण्डलियों में गुरु और शुक्र जो दोनों शिक्षा से सम्बन्ध रखते हैं, उनका प्रभाव सभी कुण्डलियों में पायागया एवं यह ग्रह बली पाये गये।
2. बुध वाणी एवं बुद्धि का कारक ग्रह है। प्राध्यापकों की कुण्डलियों में से पॉच कुण्डलियों में बुधादित्य योग पाया गया एवं अन्य में धनेश, लाभेश अथवा पंचमेश से संबंध पाया गया।
3. शुक्र, गुरु के साथ सम्बन्ध बनाता हो तथा लग्न, लग्नेश, पंचम एवं पंचमेश से भी संबंध हो या प्रभाव डालता हो तो प्राध्यापक बनाता है यह पुष्टि भी कुण्डलियों के अध्ययन से हुई है।
4. विद्या स्थान का स्वामी अर्थात् पंचमेश की नौ मे से छः कुण्डलियों में धन स्थान, पराक्रम स्थान, दशम स्थान एवं लाभ स्थान से युति अथवा संबंध किसी न किसी रूप में पाया गया। अतः विद्या व्यवसाय से आय प्राप्ति का योग बना।
5. यदि कर्म भाव अथवा दशम भाव का संबंध गुरु, बुध, शुक्रसात कुण्डलियों में पाया गया एवं अन्य दो कुण्डलियों में लग्न अथवा लग्नेश से संबंध पाया गया।

उपसंहार – भारतीय ज्योतिषशास्त्र मानव के भाग्य, भविष्य, आयु, सन्तान तथा जीवन में घटने वाली घटनाओं की जानकारी देने वाला ऐसा विज्ञान है, जिसे हजारों वर्षों से मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में भी दिन प्रतिदिन ज्योतिषशास्त्र में लोकाभिरुचि की वृद्धि हो रही है। नवीन शिक्षा–दीक्षा से सम्पन्न नवयुवक, समुदाय भी दिनानुदिन ज्योतिषशास्त्र की ओर आकृष्ठ हो रहा है।

फलित ज्योतिष में ग्रहों का फल विचारने के लिये ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट, ग्रहबल, ग्रहस्थिति आदि जानकर ग्रहों के गुण, धर्म, दृष्टि, स्थान आदि अनेक बातों पर पूर्णरुप से विचार कर ग्रहों की स्थिति आदि द्वारा बनने वाले अनेक योगों पर ध्यान देकर, देश, काल, अवस्था के अनुसार फलादेश किया जाता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनेकानेक उपयोगों में एक उपयोग व्यवसाय चयन में सहायता प्रदान करना भी है। वर्तमान में कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श का प्रचलन है।कैरियर मार्गदर्शन करते समय यदि फलित ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार व्यवसाय के विषय का चुनाव किया जाये तो व्यक्ति विशेष की सफलता के अवसर बढ़ जाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन व्यवसायों के चयन से संबंधित है, इसमें शिक्षा व्यवसाय को आधार बनाकर उससे सम्बन्धित ज्योतिषीय योगों का विवेचन किया गया है। इसी को आधार बनाकर अन्य व्यवसायों के लिए भी उन व्यवसायों से संबंधित ज्योतिषीय अध्ययन कर हम विद्यार्थियों की कुण्डलियों का अध्ययन कर उनको यह परामर्श उपलब्ध करा सकते हैं कि किस जातक को कौन सा व्यवसाय अपनाना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थों की सूची :–

1. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, पाराशर डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2008.
2. श्रीमत्कल्याणवर्म–विरचरिता सारावली, डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2025.
3. जातकपारिजातः, वैद्यनाथ पण्डित गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी 2008.
4. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, पाराशर डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2008.
5. भारतीय ज्योतिष, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2008.
6. लघुपाराशरी, पाराशर डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2007.
7. जातकाभरणम्, दुण्डिराज श्री सीताराम झा, ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार, वाराणसी 1982.
8. सचित्र ज्योतिष–शिक्षा, बी0एल0 ठाकुर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1998.
9. भृगु संहिता महाशास्त्र, आचार्य भृगु पण्डित केवल आनन्द जोशी, राधा पॉकेट बुक्स, मेरठ, 1998.
10. चमत्कार चिन्तामणिः, भट्टनारायण ब्रजबिहारीलाल शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1994.
11. ग्रह–फल चन्द्रिका, जगदीश पण्डित, सुमित प्रकाशन, आगरा, 1991.
12. फलदीपिका, श्री गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2015.

****